Wordcraft

THE RAMJAS LITERARY SOCIETY

रामजस साहित्यिक समिति

AUGUST-SEPTEMBER 2020| ISSUE 7

अफ़साने

FOR THE PENSIVE MOODS AND
THE MUNDANE DAYS.

Catching the Flow of my Stream

an intricate
tapestry
a carefully crafted
design
of ideas
woven
with yarn —
a big ball of
words borrowed
from here
from there
from everywhere
spilling
all over the
floor
of my mind
lacing reason
underdone.

i gently wind
all threads
their remnants
fine fragments
back together
wrapping around
my index finger
my being
letting loose
gently, hurriedly
on a canvas
keen.
all
only to mimic
a design
not mine.
not mine.

strings mismatched
rough ends
brought together
a seemingly
seamless whole
arising —
a unity
inorganic, incomplete.
an engineered craft.
and i,
a technician of art.

trimmed edges
knotted
somehow
pieced together
tied up
neat, orderly
tight.
tight.
my broken flow
of reverie
scattering rivulets, losing way
my trapped utterances
tangled sensations
a cooped
circulation.
all caught
in a web
birthing
a motif, bonny and alike —
not mine.
never mine.

nothing escapes
my upholstery.
no penetration
suffocation
all lost in
interpretation.

~Sadhika Verma
B.A. (English) III year

मौन रहूँगा

मैं अब मौन रहूंगा
ना कुछ कहूंगा न कुछ लिखूंगा
अखबार नहीं पढ़ूंगा
आंखे मूंद लूंगा
तुम कहोगे "ऐसा पहले होता था अब नहीं होता "
मैं चुप रहुंगा
तुम कहोगे "हर बात को जाति से मत जोड़ो"
मैं शांत रहुंगा
तुम कहोगे "मैं ऐसा नही करता"
मैं कुछ नही बोलूंगा
तुम कहोगे "मैंने ऐसा होता कभी नहीं देखा"
मैं मान लूंगा
तुम कहोगे "मुझे नहीं लगता ऐसा हुआ होगा"
मैं जवाब ही नहीं दूंगा
अब मैं मौन रहुंगा कुछ नहीं बोलूंगा
एक दिन चीख पड़ूंगा
तब तक मैं मौन रहुंगा
तुम कुछ भी बोल सकते हो..
बस तुम सुन नही सकते
बस इसीलिए मैं मौन रहुंगा

~अमन गौतम
B.Sc. (Zoology), द्वितीय वर्ष

हिंदी-हमारा गौरव

यूँ तो सभी भाषाओं का है अपना ही रस, अपनी अनूठी संस्कृति है,
किन्तु जब बात निजभाव अभिव्यक्ति की हो, तो कलम मेरी हिंदी ही लिखती है।
है गौरवशाली इतिहास जिसका,साहित्य-साम्राज्ञी है,
वह हिंदी -हमारी मातृभाषा संपूर्ण विश्व जिसका अनुरागी है।
कबीर, तुलसीदास, सूरदास जी जैसे महान कलमकारों के भाव पिरोये जिसने,
द्विवेदी, निराला, गुप्त, प्रसाद, पंत जी की कृतियों के तो क्या कहने।
सर्वभाव की सुंदरता को दर्शाने का जो उदाहरण है,
विश्व पटल पर भारत देश गौरवान्वित जिसके कारण है।
इतना धनवान साहित्य कही और शायद ही हो,
जिसकी प्रशंसा में शब्द पड़ जाते सीमित हो।
सुंदर , सहज, सरल , सुरीले शब्दों का उत्तम एक सम्मिश्रण है,
माँ हिंदी का स्वर रहे अमर, ऐसा हम सबका ही प्रण है।
इसके अदम्य प्रभाव को जीवित है रखना ,
कर ज्ञानार्जन निजभाषा का गर्व से बनें हिंदी के वक्ता।
सत्य ही है--कोई देश बिना निजभाषा ज्ञान और गौरव के,नहीं उन्नत हो सकता।

~ नैना दूबे
B.A. (Economics), तृतीय वर्ष

The Truth

Let me for once not speak about the things that went wrong
Let me for once speak about the things that went right
Let me for once not describe the might of the dark that surrounds us
Let me for once glorify the small flame sparkling within us
Let me for once not scare you by revealing the power of the monster you are standing against
Let me for once amplify your strength by celebrating your unity in the face of adversary
I know I am Truth and I am not supposed to lie but let me for once
Not be some facts which in any way discourage you
But the hope to which, you all can withhold too.

~Kushagra Nag
B.A. (Pol. Science) II year

कुछ भी होगा ना जाया

वो जो स्याह रातों में
ख्वाब सजाते हो तुम
सच कहो कैसी पहेली
बनाते हो तुम
चांद तारों को छूने की
तमन्ना जो है
ये हौसला कहाँ से लाते हो तुम
है यकीं जो इतना खुद पे तुम्हें
देखा है सपने वो भी बड़े
कहो कैसे करते हो सब
बुनते हो ख्वाब बिना मतलब
ना रूकना ना झुकना आता तुम्हें
चले जा रहे हो, कहाँ जाना तुम्हें?
है कोई क्या मंजिल या है बस फसाना
सुनाओ हमें भी कोई एक तराना
अरे देखो ना तुम भी
क्या किये जा रहे हो
रिश्तों को छोड़कर
जिए जा रहे हो
रूको जरा रूक कर देखो इधर भी
छंटा है अंधेरा और उगा है सूरज भी
करो अब तुम वो सब, जो तुम करने थे आये
मंजिल है पास अब देखो दूर जा ना पाये
लगा दो अब सबकुछ जो भी है तुम्हारा
हो आये यहाँ तक है आगे किनारा
बस एक दांव और है तुमको लगाना
फिर स्याह रातें जो काटी
जो लोगों को खोया
यकीं मानो मेरा
कुछ भी होगा ना जाया

~मास्टर शिवम
बी.ए. (राजनीति विज्ञान), तृतीय वर्ष

In thickets
Of suburbanite dystopias
Blocks lined with unpapered separations
And homely violence
Sagging and stiffening
On the clothesline
Windows, lit then unlit
I wrote you these piecemeal poems
Addressing it to the boy with mild tornadoes in his kneecaps
And a Van Gogh print in his room
Levying on the rostrum
About a new kind of love
A love that gives you a little room for selfishness
One that takes as much it gives
Asking dryly a long-standing question
Is it ever possible to collect whims and wisdom in the same life?
To know that it all is a botched trick
Yet play it and over again

~Shushrut Yadav
B.A. (English) II year

घरौंदा अपने सिवा औरों का भी बसाया करो,
अपने घर के आंगन मे एक पेड़ लगाया करो।

जमाना वजह सोच सोच कर मर जायेगा,
तुम यूँ ही बेवक़्त बेवजह मुस्कराया करो।

ना छोड़कर जाना ठीक न ठीक ठेहर जाना,
मोहब्बत जवां रखनी है तो आया जाया करो।

हर हाथ यहाँ नमक लिए बैठा है,
घाव अपना किसी को न दिखाया करो।

किसी से कोई वादा न करो तो अच्छा,
किसी से वादा करो तो निभाया करो।

ये लव शव ने ही कर दिया मज़ा खराब,
मोहब्बत तो आज भी कहती है शर्माया करो।

न सुधरी तबियत मंदिर जाने से तो,
हकीम ने कहा उसकी गली मे जाया करो।

ऐसे भी जांचो कभी वफादारी अपनी,
खुद को बतायो राज खुद से छुपाया करो।

~ दीपक सिंह
B.Sc. (Mathematics), द्वितीय वर्ष

अंतरद्वंद

लोग कहते हैं भुला दो इतिहास को,
यौवन मन कहता है लूटा दे अपने आप को ।
दिल कहता है तु न आने दे बदहवास को ,
क्यों याद करता है किसी खास को ?
इतिहास भी लौटेगा और यायावरी भी,
पहले छूले आसमान को ।

~आशुतोष कुमार जायसवाल
बी.ए. (राजनीति विज्ञान), द्वितीय वर्ष

Overarching an air of Romanticism

I have come a long way wandering without a name and my waving mind is proof of that.

We concede that youth is not just a phase, for it's a feeling, an expression beyond worldly expression. There are overwhelming emotions; there is friendship, love, envy, happiness, sacrifice and despair, still a continuing zeal to embrace all of it and grow-shine.

There is something momentous in these random patterns around us that goes on forever, I have always relied and at the same time felt overwhelmed and still revered to it most. What we see and decipher from here is so dear, we never want it to go.

The things lost in youth are what we search in rest of our life. We crave, for the time, for the things which are gone astray and regret for not knowing them in past. We can't help but think, world would have been much simpler if known prior, but then we would not have the inspiration to do or become what we are today.

Youth holds light and colours in its arms. It asks us to grow like a sunflower shine bight facing forward to the brightest, with no regrets and "to be or not be with one". Time changes, but our memories stay, we carry them and they shape us in mysterious ways, make sure to get them right.

Make sure to give your best in every situation, to live to the fullest, to be judicious about wrong and right for yourself and persist all you can, for these are aspects of youth.

So do well and believe in the power of love. Be there for each other, to help them grow and to uphold support them. So they know, someone will hold them when they are low. Be a sun for a sunflower, I will be yours, will you be mine?

My wavering mind has witnessed it all, thus, I have hoisted my sail to follow the heart instincts.

~Harshul Singh

B.A. (Pol. Science) II year

एक वक़्त के खाने के लिए मैंने अपना ईमान बेच दिया,
गुरूर था मेरा जो, वो सम्मान बेच दिया।
नजरे नहीं मिला पाया उस खुदा से जिसने रहमत दी,
मेरी तस्वीर भी मुझे देख कर अब ना सहमत थी।
रुला रहा था वो हर टुकड़ा जो मैंने खाया,
भरे पेट में भी मैं भूखा ही लौट आया।
सहमती देता मेरा ईमान अगर तो मैं सब सह जाता,
पर कुदरत का कानून ही कुछ ऐसा है, खाली पेट कैसे सो जाता।
सीखा था मैंने दिलों में जिंदा रहना,
अब यही सबको कहता हूं की ये बात और किसी को ना कहना।
काश मैंने जरा शर्म या लिहाज किया होता,
हर एक बूंद उस आंसू का जो ना पिया होता।
तकदीर मैं लिखा था जो वो होना था मेरे साथ,
इसे झूठी तसल्ली कहो या दिल बहलाने की बात।
ईशारे किए थे उस खुदा ने भी, कुछ लम्हे है सहने को,
पर वक्त कहा था कुछ सुनने या कहने को।
कर ली मन मर्जी मैंने अपनी ये भूख मिटाने की,
भरे समंदर के बीच, ये झूठी प्यास बुझाने की।

~महिम्न दशोरा
B.A. (Prog.), द्वितीय वर्ष

Maa
tells me stories.
Stories not untold.
A ritual
retelling of tales.
In her eyes
the forlorn youth.
Her wrinkles blur
as she speaks
with the details of her old house,
the colours of its walls.
Her pretty frock,
tailored by her grandmother.
Her wrinkles
grow fainter.

She tells me about the places
she found love.
Tales of mothers
and their dying infants.
Her folks.
Her grandmother given to marriage
When 10
or twelve.
Her age
known to no one.
82 springs have passed.
And she's lived.
None passed
When her hometown
did not celebrate the gangaur mela.
But today.

She's lived enough
to have seen this pandemic,
she says.
A deep sigh
that follows
tells me
She's at peace
her husband didn't live enough
to have seen this pandemic.
Her wrinkles reappear.

~Saloni Khandal B.A. (Pol. Science) III year

Creative Team

Aman Gautam

Kristi Maikap

Naina Dubey

Harshit Mishra

Anisha Bhargava

Ashutosh Singh

Mahima Rathore

Photographs by

Siddharth Prashar

Shubham Sharma

www.wordcraftramjas.com

@wordcraft.english

/wordcraft.hindi